

[illegible]

धूपमहाकाशसर्वनामकविराहयिरुपास्तुधनसुखस्यइहविंजहामि।यथासाठनैक...नात्थयदिरवम
अलिधैक...महाकाशकातहसमययथम॥ ॥ग्रामकाकातहनुवजालिधैकवठहवदुथ॥ ॥देवता
धैकनात्थस्यम॥यथमदत्ताहिरुपिअमानकसहीयमनेअवदरीरु॥अद्ययाप्रादीयतसुयतिमने
वधिविहवा॥इकातहमारनयनसोहा॥इसनाधिविहवासाहा॥उदकाहिवैकनुदीयत।यथासकैदीनेषदा
वमितायचियुधैयविहाहीदवनीनायथाविरैवदि।कस्तुविकावसुगंध्याभारिवधिवुत।समययातयति
सर्वदवाइयुतिपहियानिधुव॥ ० ॥ग्रामकाकातहनुवाडिदेवताहिवैकवठहवदुथमशा ॥

6

॥दबीपुमहासर्वकुचुतिनाम॥यमापनाइमनस्यप्रायेरुगवनेसुखभवमाइ॥रुगवनयनयनसैठायामवाइवात
मिदयतननचनादीसिद्धिदेगाविचतगुमसदेहासिनामैकिमर्थरुवना।नादीववाइवताहिवैकतायवाअथकयितीदवाइ
मडौकिमडौमडतम्याकसासवेसीकीईमनुवठहवाकैदवावीऊकैनिआनि॥असजाताकिंअधितवीऊधुलावेकिं
वाहाहवावीकथयसमयवकथमाववना॥रुगवानाह॥॥कांनयरायिऊंमहाकाकसहाकावडतिअ
ककासयरावमवाडिअ॥कयतिआ॥नवालिअ॥गहिसहासांसनिरुवदवा॥अ॥वीव॥सका
मइहसकाहिऊहय॥अ॥वा॥अ॥इइवमाठय॥सनिकायवकह।नांसकावडममजावअ॥साचिती

五

ऊनीयंचकृदयैथचयक्रिसातननिद्रोपस्थिति॥यनःनागामस्यप्रक्रियासहदेवायतुचसपाचवधमसायतेःयकवर्षेचनचय
तवामचकृःय्यात्मदीचि॥महाकासहलुतिकासावृष्टिऊदातिमिरुताप्रकधीहकसधूसतनितःयवतादयतलनवीताविहिरि
नीडीमाहाप्रक्रियाएकमेतसासुनियमिनवस्थितिमहिरि॥गानुस्येनवयलीयातसेलिसेपातनूनगिलोदकेःयकवर्षेचय
॥स्यस्यसात॥सहानुचमऊनीडवेःयवतायक्रिसासिदेवतितनेलःयुरुकतिस्यदिनेयवधमसहमेनाऊयतासत्सनाचित्तिय
स्थितिहृदातीसमसाहोतीहसधिरि॥धर्मासय्येनेलउमजाचनोसयकेधनिसादकयप्रहस्याऊनीय॥द्विद्वयैयैकेतनेग
निधिपहयेतधुवे॥अमिउलीडवताजाचनोसयकेवताहिरिमीयी॥गधनकेयीहयजिह्मव्यातवेवाहिरिहृदातुसजीवितन
वमकयासकऊनीयाहयतोपधमइहयमलकहरेऊनीयंचकृदयैअहकयतसयकेधचिडापधमिमिदिनी॥सातितकत
ना २

५१२

天



६२

[illegible]

到

यिर्वा निमित्तं तं ह्यनुनाद ह्यारुकोत। वर्यं कयावत ॥ यनस्थामसाठ टिकमिहिनया ॥ अथस्यमचरुः इवधुनामं कविं
 तिष्ठतिर्कमसाकासदसमसीठ। तिकं प्रतासवीमपि कुसधनाठानोयवैयके ठाति कंवाचयत। यथमसकं ठाति कंमवियुक्तिया
 ठासाहीदिति यः देया देसुयाचयवादेतीययकेमतिजकं सताठ सारुध्यालवतिनून। यथाचमवीवासेक सुचतु देत्यातिथि
 मसाती जंघुअसमसातजययतातदसजंमसिका डवैरुगीनडवनवातिकाकाचयत। इवीमनुनस्यधुनाविवाठ दसाहायवि
 य्या देह्यालवति। सयदिनं दवीमनुं कयाहमधमनि ता रुक्यत। मदिनात थसर्ववी डडासमक ॥ रुगवानाह ॥ दवीमवीसडिसाध
 यं प्रता ॥ लया कयिर्कं कथं तत्तस्य कथनं कथयमित्तासा मथोनकिं क्रियत तत्तस्य कथनन सर्वसिध्दतिरुचया ॥ दवा दे ॥ रुगवा
 वजं मदीये दाविड रुययि जीतानी सताना सुखरुत वेक यिर्कथयिष्यामि ॥ ॥ ॥ ॥ मसाकास गंजाई दावीयजी यय्या यादान

२२

मडुटिकाः पटवानवमः ॥ ७ ॥ अथतर्पणवक्रामियाइकीचरु नास कृती। याइकमिदि ॥ रुगवानाह ॥ याइक द्वादश रुजमनु
 गुयके न कृतासासह सिद्धिमरु मेयुथमदि नसमयचसमि जे ४ यशासमसे डवेठाववीपिचयत। डयसगुसकादसयता अने
 जीकारुवति ॥ गगधचरु वैयिकचसमचिर्क सिद्धिचमसाह याकिचससुसमते धनामसिद्धिकयकेमयादचनयनके अरुलिम
 कलीकै। यदामेठे मसातात देवगुमसमसीचितग डुठासिकेन कसतु सनचूर्त्तन गहायचमधनायादसययत। अरुवीक
 रुवतिनून ॥ समयीरुगवादेठाकः दशनीयरुगवर्क सिद्धिचतुसन सातानः ॥ अथचसुयगसवसायी हंधवचवनयविम
 चकठमजकान् योठगरुजमकृतसयधुनाः मनि कनयादचयनाक मरुती कारुवति। यथममिज ४ समचठा कचतसि
 धवसाधुमरुकेः यवीकैमनु वैयिमनरे ४ मठ ये ॥ धिर्क सातसिध्दतिचक्रमतीकली नागीययिकचससचिर्कनयितरुम

॥ तत्र नृप्यादकयदसादशमः ॥ ० ॥ अथ सर्वधर्मसांख्ये लवः कथा ॥ दवाह ॥ खवत्सर्वधर्मययवसागजहंसयकिञ्च
 लके ॥ कनासिध्वन् कनयतसकीयदवताचयान् ॥ रगवानाह ॥ कदवीकृतमयि नूनोवताः सचिह्नाः सति धर्मसिद्धि
 काचिह्नः ॥ पुथमदिवम-आलीमकासयनः यनः ॥ नैयु कयितं ॥ रुचयता ॥ दवाह ॥ ललारगवतकृतमयिचतल
 यचिमुसन् यथावद्विहयवय केकलादिनामनसिध्वतिजावादिनी ॥ प्रकसन् यथा न्यायासिद्धकस्यकायास्ययचिरुम
 नैसिध्वति ॥ विचलतमहसिद्धिः ॥ रगवानाह ॥ दवीमहत्तनयुयाजनै एवमिहिननखनरुवति यहेयदधिनेयोदक स
 हाकवेनाचिह्नयदे ॥ रिकामहत्तमयाही मजनममयलेकत दकसैयकेयनमेयद नासीसिद्धके नायोवम् ॥ अस्मिवादिम
 समगिर्वत्समासिद्धिनिर्मले मनुसिद्धिचिह्नवै यवमाचयदेवमसिद्धि धनाथनः ॥ रगवत दरेचनरु नमोवधिध्वकासा
 यग्धयुकलितमिहदस ॥ गद्यथलवनाचिह्न नाही एवमिहानाजीनी जाजाना अरधूखानयः ॥ दवाह ॥ ललारगवतम

विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् । श्रीगणेशाय नमः । तदेव सिद्धिः ॥ एतावान्नादः ॥ दत्त उवाच ॥ यामरकथा र्यदा सदा सम्यक् सिद्धं ह नृपदं विष्णुना
यथासाध्यं कुरुते ॥ इति श्रीमद्भक्तप्रियेष्टसमाहितं यदाचित्तं तच्चित्तं सदादैवभागेन ज्ञातं कृतं अस्ति दिव्याया साधितं वसिष्ठेन
समाप्तं वाकेष्वेव कथारिव रक्षय यथा हा धिर्माना विद्यामिवा तन्ने चित्तिकी सा यदिक या मिया गोचिरु मा हुत वेत दा म हो ने फल
नि यथा सुखं कथामहे नी आख्याय ४५ भागी वा नू मथा यदि न स्फटिति ॥ ० ॥ ॥ इति श्रीमद्भक्तप्रियेष्टसमाहितं यदाचित्तं तच्चित्तं सदादैवभागेन ज्ञातं कृतं अस्ति दिव्याया साधितं वसिष्ठेन
१८२३ ॥ ॥ ॥ श्रीमन्नवा ऊन पठ सखा दगा म्मा सः ॥ अजने समज सी क रतं नाह क का नू था ग मि ति य त्य च नः ॥ बा धू य न न ज न
भवति यथा ॥ ॥ ॥ ॥ श्रीमन्नवा ऊन पठ सखा दगा म्मा सः ॥ अजने समज सी क रतं नाह क का नू था ग मि ति य त्य च नः ॥ बा धू य न न ज न
आमक ईने पाठ येन ॥ अकु रु य मा क्रिय ता का क लो ण ड ने य थ य कि व डे मे ने ॥ आ का ला अथ न घ न मा म ग न के छ ये म डे शू म
बा ल द न य ध यौ ॥ ॥ ॥ ॥ श्रीमन्नवा ऊन पठ सखा दगा म्मा सः ॥ अजने समज सी क रतं नाह क का नू था ग मि ति य त्य च नः ॥ बा धू य न न ज न
या य न क द म नु ने म य हि त नि कु त ॥ ॥ ॥ ॥ श्रीमन्नवा ऊन पठ सखा दगा म्मा सः ॥ अजने समज सी क रतं नाह क का नू था ग मि ति य त्य च नः ॥ बा धू य न न ज न

...मासा...
...विशक्ति...
...मासा...
...विशक्ति...
...मासा...
...विशक्ति...
...मासा...
...विशक्ति...
...मासा...
...विशक्ति...
...मासा...
...विशक्ति...

...मासा...
...विशक्ति...
...मासा...
...विशक्ति...
...मासा...
...विशक्ति...
...मासा...
...विशक्ति...
...मासा...
...विशक्ति...
...मासा...
...विशक्ति...

ह विद्याति वडा सामानतस्य यजुः विद्याति। ऊ नम ऊ य म ऊ ग्री र हू न क स ऊ द म ॥ का टि स ऊ नि ऊ क नि ऊ स ह
 ल म न ता न द सा ह न व ह ली। ह द न त न व मी स न वा जा र वि द्या ति। य ऊ य यी गु त वि क री। त द न या जी न वि र वि क री। ना र ००
 मी ग मी। त स्य व ह म नि मी यु य मी द मी। त स्य व ह म नि मी यु य मी द मी व न नै। त गु य य या दि र वि द्या ति य नू या दि ॥ ५ व १००
 १०० पर न ४ यो ल वा क न र वि त वी। त न य न य म री। त ह सा द द नू यो य दा मा मी द या न नि ऊ म् व न वा य ट ता। आ दिः
 ह म र य त न व क वि द्या ति। का ल का ल र ऊ र मी २०० य ५५ ई नू य मा ल न वा जा र वि द्या ति। स म्भ ३०० व र वी ३॥ व दिः
 का ल का ल मी र वि द्या ति। क री ऊ नाम न जा त गु र वि त वी। मी हू न स्य त म र मी। त न य न वा मी मा न म न जा जा र वि द्या ति।
 का ल प मि ना म न ग जी र वि द्या ति। त गु य गु दि र नै। वा य न स्य व मा स क र २०१ व २०० का २ ग मी ऊ र ग ३००० व र वी ३॥
 वी ३४ ग स्य र मी य क मी ग २०१ य य २॥ त द न न व य वी क न क सा र ह ना मी र वि त वी। म व वि क म य यी य मी ह मी य
 क न क सा र व म म आ मि ३

२१

स्य क धि री र ठा व ता कि क या गि नि सि डि व ग्रा म्। त स्य य गु र वा जा र वि द्या ति। ऊ स्य म स्य त व या गि नी न का म सा द वी
 त स्य द ही। यु य या दि स नू यी म २०० का ३४ १००० व र वी ४०० स ग व ०० नि व ३॥ ३३ डि श य न म त नू म र ड वा क री
 व त या वि री नू य २ वा जा २०१ यी का ह्या क य ४ क रिय ग ४ प वि की रित ४। ऊ स्य म स्य त मी क य ना ध न सा धा र व र वी
 ऊ व र मी ना म न या व स ४ य नि यु व ह ३ स सा द य नि व द न ४। डा ड वा क मी र ह ३ यी याः का ल ना ग ला जा ना व य य नि।
 व र वी का म ती य द २०० यदि ना स्य क थ ऊ स्य य ४ मी ग मी सा ह २॥ व दि डि या त नी द न य वी ३॥ ३४ म र ना र व टि या क री
 र व टि का सा धू ना स्य ति यु त श व रीः य कि रितः मी स व री मी य व री स मिति। ना र यी या त ना वा री गिं ड म य नू री या
 व र मी द न र वी गि वा ना जा र वि द्या ति। य गु या व र य न ३। का ल न र वि त वी। गिं ड व र य व र। य गु डा ड द ग स्य स र वी

२५-

[illegible]

35

[illegible]

कया नियम वा शास्त्रेति । अथ कीदृशं शास्त्रं कथं । तत्तु यथेष्टम् । ॐ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

३६
३७
३८

३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

[illegible][illegible]

[illegible]